भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश् वर
Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विचार, बोध और वास्तविकता के इंटरफ़ेस पर चर्चा

भुवनेश्वर, 27 दिसंबर 2025: इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी भुवनेश्वर के स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज, सोशल साइंसेज और मैनेजमेंट (SHSSM) ने सेंटर फॉर फाउंडेशन ऑफ साइंस एंड कॉन्शसनेस, भक्तिवेदांत इंस्टीट्यूट, भुवनेश्वर के सहयोग से 27 दिसंबर 2025 को थॉट, परसेप्शन एंड रियलिटी (ICTPR 2025) पर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन किया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि, प्रोफेसर एंड्रयू ब्रिग्स, नैनोमटेरियल्स के एमेरिटस प्रोफेसर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी; सम्मानित अतिथि, प्रोफेसर (डॉ.) अशोक कुमार महापात्रा, पद्म श्री पुरस्कार विजेता (2025) और पूर्व अध्यक्ष, एम्स दिल्ली; प्रोफेसर श्रीपाद कर्माल्कर, निदेशक, आईआईटी भुवनेश्वर और श्री वासुदेव राव, अध्यक्ष, भक्तिवेदांत इंस्टीट्यूट, कोलकाता उपस्थित थे।

हिस्सा लेने वालों का स्वागत करते हुए, प्रो. श्रीपाद कर्मलकर ने IIT भुवनेश्वर के अनोखे कैंपस इकोसिस्टम पर ज़ोर दिया और कहा कि किसी भी संस्थान की असली ताकत इंफ्रास्ट्रक्चर से परे, उसके "सामूहिक अनुशासन, रिसर्च की गंभीरता और आदतों की ईमानदारी" में होती है। भारतीय और पश्चिमी दार्शनिक परंपराओं का हवाला देते हुए, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि असरदार एकेडमिक लीडरशिप कठोर मानकों और पारदर्शी फीडबैक के ज़रिए संस्थागत वास्तविकता को साझा सोच के साथ जोड़ने पर निर्भर करती है, जिससे नियमों का पालन सार्थक योगदान में बदल जाता है।

इस कॉन्फ्रेंस में जाने-माने विद्वान, शिक्षाविद और विचारक एक साथ आए ताकि सोच, समझ और सच्चाई की प्रकृति पर अलग-अलग विषयों पर चर्चा कर सकें, जिसमें दर्शन, मनोविज्ञान, विज्ञान, चेतना अध्ययन और मानविकी शामिल थे। मुख्य अतिथि, प्रो. ब्रिग्स ने समझ और सच्चाई के बीच संबंध पर बात की, और ऑब्जर्वर इफ़ेक्ट और अंदरूनी अनिश्चितता को उजागर करने के लिए क्वांटम थ्योरी से जानकारी ली। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसे व्यक्तिपरक चुनाव वस्तुनिष्ठ सच्चाई को आकार दे सकते हैं, और एक बेतरतीब दुनिया में वैज्ञानिक समझ और आध्यात्मिक ज्ञान के बीच संबंध बनाए। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को गाइड करने वाले मूल्यों और नैतिक सच्चाई की संभावना के बारे में महत्वपूर्ण सवाल भी उठाए, जिससे सोच, समझ और सच्चाई के मुख्य विषय को मज़बूती मिली। सम्मानित अतिथि प्रो. (डॉ.) महापात्रा ने चेतना अध्ययन और नैतिक जांच की समकालीन प्रासंगिकता पर बात की। सार्वजनिक संस्थानों में प्रशिक्षित मेडिकल प्रोफेशनल्स के उदाहरण का हवाला देते हुए, उन्होंने समाज और मानवता की सेवा करने की नैतिक ज़िम्मेदारी पर ज़ोर

दिया, यह देखते हुए कि भले ही धारणाएं अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन सार्थक कार्रवाई और सामाजिक प्रतिबद्धता के लिए चिंतनशील सोच केंद्रीय बनी हुई है।

श्री वासुदेव राव ने भक्तिवेदांत इंस्टीट्यूट के विज़न और गतिविधियों पर एक संक्षिप्त भाषण दिया। अपनी संक्षिप्त टिप्पणी में, उन्होंने कॉन्फ्रेंस के विषय की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला, जो विज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिकता के संगम पर स्थित है। मॉरिस मर्लेउ-पोंटी का हवाला देते हुए, उन्होंने कहा कि दर्शन के बिना, विज्ञान अपने ही विमर्श के बारे में स्पष्टता का अभाव रखता है। चेतना को एक केंद्रीय रहस्य के रूप में जोर देते हुए, उन्होंने विचार, धारणा और वास्तविकता को समझने के लिए एक खुले, एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया।

यह कॉन्फ्रेंस IIT भुवनेश्वर में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. श्रीतमा मिश्रा (दर्शन) और डॉ. अपर्णा पांडे (मनोविज्ञान), साथ ही भक्तिवेदांत इंस्टीट्यूट भुवनेश्वर के निदेशक श्री जीतुन ढल द्वारा आयोजित की जा रही है। ICTPR 2025 के लिए एब्स्ट्रैक्ट्स की पुस्तक का औपचारिक रूप से उद्घाटन समारोह के दौरान विमोचन किया गया।

आने वाले दो दिनों में, यह कॉन्फ्रेंस बौद्धिक विचार-विमर्श और अंतर-विषयक सहयोग का वादा करती है। ICTPR 2025 एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक आयोजन है, जो दर्शन, विज्ञान और चेतना अध्ययन के बीच सार्थक संवाद को बढ़ावा देता है। यह कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर अंतर-विषयक अनुसंधान और बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए IIT भुवनेश्वर की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है।